# ज्वालामुखी योग - 26

**अव्यक्त बापदादा :-** (21.12.1989)

➳ _ ➳ होली अर्थात् सदा पवित्रता की शक्ति से अपवित्रता को सेकण्ड में भगाने वाले। न केवल अपने लिए बल्कि औरों के लिए भी। क्योंकि सारे विश्व को परिवर्तन करना है ना। पवित्रता की शक्ति कितनी महान है, यह तो जानते हो ना! पवित्रता ऐसी अग्नि है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। सम्पूर्ण पवित्रता ऐसी श्रेष्ठ शक्ति है! अंत में जब सब संपूर्ण हो जायेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प में लगन की अग्नि से यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। योग ज्वाला हो। अंत में ऐसे धीरे-धीरे सेवा नहीं होगी।

➳ _ ➳ सोचा और हुआ - इसको कहते हैं 'विहंग मार्ग की सेवा'। अभी अपने में भर रहे हो, फिर कार्य में लगायेंगे। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों को भस्म कर दिया। असुर नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म कर दिया। यह किस समय का यादगार है? अभी का है ना। तो ऐसे ज्वालामुखी बनी। आप नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! तो अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव-सब-कुछ भस्म करो। अपने तो कर लिये हैं ना या अपने भी कर रहे हो? अच्छा !

➳ _ ➳ निर्भय तो बन गये। डरने वाले तो नहीं हो न? ज्वालामुखी हो, डरना क्यों? मरे तो पड़े ही हो, फिर डरना किससे? तो सदा नये राज्य की स्मृति रहे। सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अंदर जो तमोगुण है उसे भस्म करने वाले बनो। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड से करेंगे तब पूरा होगा। अभी तो व्यक्तियों को ही संदेश नहीं पहुँचा है, प्रकृति की तो बात पीछे है। तो स्पीड तेज करो। गली-गली में सेंटर हों। क्योंकि सरकमस्टांस प्रमाण एक गली से दूसरी गली में जा नहीं सकेंगे, एक-दो को देख भी नहीं सकेंगे। तो घर-घर में, गली-गली में हो जायेंगे ना। अच्छा!

---

➢➢ सम्पूर्ण पवित्रता

➳ _ ➳ **सम्पूर्ण पवित्रता ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है**

→ **रोज चेक करना है - एक चार्ट ऐसा हो जो केवल पवित्रता का चार्ट हो**

→ पवित्रता की सारी बातों को हर दिन चेक करना है

- क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउंडेशन है, निज धर्म है, प्राण है, आधार है
- ये है तो सबकुछ है नहीं तो कुछ नहीं

➳ _ ➳ **Purity का Package रोज बाबा से लेनी है**

→ 21 जन्मों की बादशाही है

- 21 बातें जिसमें रोज सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करना है
  - रोज योग में सारी 21 बातों के ऊपर किरणें पड़ रही है और 21 बातें शुद्ध हो रही है

---

➢➢ रात में चेक करना है, चार्ट बनाकर टिक करना है की किन 21 बातों में पवित्रता का खंडन हो रहा है-

➳ _ ➳ 5 संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क और चलन

➳ _ ➳ 2 तन और धन

➳ _ ➳ 2 मन-बुद्धि और संस्कार

➳ _ ➳ 4 दृष्टि, दृष्टीकोण, वृत्ति और आदतें

➳ _ ➳ 4 खाना, सुनना, लिखना और स्पर्श करना

➳ _ ➳ 4 भाव-भावना, स्मृतियाँ, कल्पना, स्वप्न

---

➢➢ संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क और चलन

➳ _ ➳ **संकल्प बीज है, संकल्प आधार है**

→ रोज चेक करना है-

- हमारे संकल्पों में कहीं अपवित्रता तो नहीं,
- विकार तो नहीं,
- विकार के अंश तो नहीं,
- व्यर्थ, नकारात्मकता, साधारणता तो नहीं
  - **साधारण संकल्प भी अपवित्रता है**
- एक व्यर्थ, वेस्ट संकल्प भी जंगल खड़ा कर देते हैं
  - श्रेष्ठ संकल्प, पवित्र संकल्पों की रचना करनी है,

जमा करना है,

  - मुरलियों से पावरफुल प्वाइंट निकालना है,
  - **एक-एक प्वाइंट को बुद्धि रूपी झोली में संभाल कर रखना है**

- **पवित्रता के स्वमान हमारे पास हों**,
- रोज स्वमानों का अभ्यास करना है
  - मैं परम पवित्र आत्मा हूँ
  - मैं पवित्रता का अवतार हूँ
  - मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ
  - **मैं पवित्रता के सागर की संतान मास्टर पवित्रता का सागर हूँ**
  - पवित्रता मेरा स्वधर्म है
  - पवित्रता मेरा स्वभाव है
  - पवित्रता मेरा निजधर्म है
  - मैं पवित्रता के सूर्य की संतान मास्टर पवित्रता का सूर्य हूँ
  - मैं पवित्रता का स्तम्भ हूँ
  - मैं पवित्रता का लाइट हाउस और माइट हाउस हूँ
  - मैं पवित्रता का फाउंडेशन हूँ

- मैं साक्षात् पवित्रता स्वरुप हूँ
- मैं पवित्रता की देवी हूँ
- पवित्रता जन्मसिद्ध अधिकार है
- मैं पवित्र ब्राह्मण हूँ
- मैं परम पूज्य देव-देवी स्वरुप हूँ
- मैं पवित्रता का अवतार हूँ

➳ _ ➳ बोल

➳ _ ➳ **बोल में विकारों की वायु, विकारों के वायब्रेशन ना हों**

➳ _ ➳ बोल में पवित्रता के वायब्रेशन हो

➳ _ ➳ हमारे एक-एक बोल में पावर हो

➳ _ ➳ **एक-एक शब्द शक्तिस्वरुप हो**

➳ _ ➳ एक-एक शब्द सीधा दिल में चुभने वाला हो

→ **विकारी आत्माओं के कवच को भी तीर की तरह भेद कर दिल में चुभने वाला हो और घायल हो जाएँ और परमात्म प्रेम की रक्तधारा बहे**

→ **ऐसा ईश्वरीय प्रेम का, ईश्वरीय स्नेह का लाइलाज घाव हो जिसे कोई हकीम, वैध, डॉक्टर उसे ठीक ना कर पायें**

➳ _ ➳ कर्म

➳ _ ➳ **कोई विकर्म ना हो, आसुरी कर्म ना हो**

➳ _ ➳ तमोगुणी कर्म ना हो

➳ _ ➳ सात्विक कर्म हो

→ तीन प्रकार के कर्म-

- सात्विक कर्म
  - अमृतवेला
- राजसिक कर्म
  - ऐसे कर्म जिसमें उत्तेजना, आवेश, रोब, जोश है
- तामसिक कर्म
  - जिसमें स्वयं दुखी और दूसरे भी दुखी
  - **ब्राह्मण अर्थात ना दुःख ले ना दुःख दे**

➳ _ ➳ सम्बन्ध-सम्पर्क

➳ _ ➳ ब्राहमणों के लौकिक और अलौकिक संबंधो का त्याग

→ घृणा, लगाव-झुकाव, झगडा या आसक्ति

- **आसक्ति में निरंतर बेचैनी है**
- झगडा एक बार हो गया तो हो गया
- **आत्माओं के साथ, बड़ों, छोटों, साथियों के साथ हमारे सम्बन्ध पवित्रता के हों**
- आसक्ति, लगाव ना हो

- लगाव है तो दुःख होगा
- **ब्राह्मण जीवन में दुखी होना अर्थात पवित्रता की कमी**

➳ _ ➳ चलन

➳ _ ➳ **ऐसा व्यवहार ना हो जिसमें अपवित्रता झलकती हो**

➳ _ ➳ व्यवहार में प्यूरिटी हो

---

➢➢ तन और धन

➳ _ ➳ तन की प्यूरिटी

→ तन की स्वच्छता

→ तन स्वस्थ

→ **वस्त्रों में भी प्यूरिटी हो**

➳ _ ➳ धन की प्यूरिटी

→ पवित्र धन हो

→ धन जो आ रहा है वो कैसे आ रहा है

→ **सेण्टर पर अभाव है तो भी अगर पता है जो धन दे रहा है उसने कैसे कमाया है तो भी ना कहने का सामर्थ्य होना चाहिए**

- **विकारी के धन से इस यज्ञ की ईंटे ना बनी हो**
- **छोटा सेण्टर हो तो भी चलेगा पर विकारी के पैसे ना लगे हो**
- **कोई 1 करोड़ का चेक लेकर आये तो भी नहीं लेना है**
  - **विकारों के दिए वस्त्र पहनने से अच्छा है चिथड़ों में रहना, महलों से झोपडी में रहना ठीक है**
  - **सेवाकेंद्र की दीवार विकारी की दीवार से टच ना हो**

---

➢➢ बुद्धि और संस्कार

➳ _ ➳ **बुद्धि पवित्र अर्थात परखने की शक्ति, judgement power पवित्र**

→ **हमारा परखना, हमारा निर्णय करना पवित्र हो**

→ हमारी प्रतिज्ञा पवित्र हो

- बुद्धि से हम जो-जो करते हैं वो पवित्र हो
  - Divine Intellect

➳ _ ➳ **हमारे जो भी संस्कार हैं वो पवित्र हों**

→ संस्कारों को चेक करना है

---

➢➢ दृष्टि, दृष्टिकोण, वृत्ति और आदतें

➳ _ ➳ **हमारी दृष्टि पवित्र हो**

➳ _ ➳ Attitude में ही अपवित्रता है

➳ _ ➳ वृत्ति संकल्प से तैयार होती है

---

➢➢ खाना, सुनना, लिखना और स्पर्श करना

➳ _ ➳ सुनने की अपवित्रता

→ कोई किसी की ग्लानी करे तो सुनना अच्छा लगता है

- Hear और Listen ( हिंदी में एक ही शब्द है सुनना)
  - Listen- अर्थात जहाँ अटेंशन है, सुनते-सुनते धारण कर रहे हैं
  - Hear- अर्थात काम चलाऊ

➳ _ ➳ खाने की पवित्रता

→ **अगर खाते समय प्रसन्नता का भाव ना हो तो वो भोजन भी हिंसक भोजन है**

- **यदि क्रोध में खा रहे हैं तो मांसाहार खा रहे हैं**
  - **धन्यवाद का, gratitude का भाव हो**
  - Complaint का भाव ना हो

➳ _ ➳ लिखने की अपवित्रता

→ **Whatsapp पर दुःख भरे messages**

- अपेक्षाएं, कामनाएं, Desires हैं
- लिखने के बाद reply ना आने का दुःख
- एक दूसरे के साथ नाराज होते रहते हैं

➳ _ ➳ स्पर्श में अपवित्रता

→ किस भावना से स्पर्श किया जा रहा है

→ स्पर्श में काम का सूक्ष्म अंश तो नहीं

→ उत्तेजना उत्पन्न होने वाला स्पर्श तो नहीं

- इसका सम्बन्ध मन से है, हाथों से ज्यादा

---

➢➢ भाव्-भावना, स्मृतियाँ, कल्पनायें, स्वप्न

➳ _ ➳ भावनाएं, स्मृतियाँ, कल्पनाएँ कैसी हैं

→ दिनभर व्यक्ति कुछ ना कुछ कल्पना करते रहता है

→ सोचते रहता है, Imaginations

→ आजकल के युवक Day dreaming करते रहते हैं

- **इसका आधार बनते हैं जो कुछ देखा, सुना, पढ़ा**

➳ _ ➳ स्वप्न में वही आता है जो दिनभर हो रहा है

→ **दिन में जिस चीज का दमन करते हैं वो रात में दिखेगा**

- दिनभर उपवास तो रात में खाने का